दिसम्बर २३ को निदेशालय में किसान दिवस का आयोजन

भाकृअनुप-सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर ने आज अपने परिसर में 'किसान दिवस' का आयोजन किया। इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ पी के राय ने वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए देश की खाद्य तेल सुरक्षा में वैज्ञानिकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा की देश के सरसों उत्पादन की अपार संभावनाएं है देश के अधिकांश जिलों में सरसों की उत्पादकता बहुत काम है जिसे किसानों की मेहनत एवं वैज्ञानिक तकनीक अपनाकर बढ़ाया जा सकता है ।

चौधरी चरण सिंह की जयंती पर किसान-वैज्ञानिक संवाद एवं प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

देश में सरसों उत्पादन की काफी संभावनाएं

नई तकनीक से बढ़ाएं उत्पादनः डॉ. पीके राय

भास्कर संवाददाता | भरतपुर

सरसों अनुसंधान निदेशालय पर किसान दिवस के अन्तर्गत आयोजित किसान-वैज्ञानिक संवाद एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को संबोधित करते हुए निदेशालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने कहा कि देश में सरसों उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं। किसानों एवं वैज्ञानिकों की मेहनत से सरसों उत्पादन में बहुत बढ़ोतरी की जा सकती है। देश के अधिकांश जिलें में सरसों की उत्पादकता बहुत कम है, जिसे वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर 25-30 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक आसानी से किया जा सकता है। यह बात चौधरी चरण सिंह की जयंती पर उनके योगदान को याद करते हुए निदेशालय के निदेशक डॉ. डॉ. पीके राय ने कही। उन्होंने कि नवीन तकनीकों की जानकारी किसानों को समय पर मिले और तकनीकों को अपनाने में आने वाली समस्याओं का समाधान समय पर किया जाए। उन्होंने कहा कि किसानों को सरसों की खेती वैज्ञानिक तरीके से करके अपना उत्पादन बढ़ाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सही उत्पाद का प्रयोग, सही मात्रा में सही समय पर एवं सही स्थान पर करने से ही फसल के उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। डॉ. एमएल दौतानिया ने किसानों को अनुसंधान कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर कहा कि चौधरी चरण सिंह ने देश के किसानों में नई चेतना का संचार किया। किसानों के हक और उनके उत्थान के लिए सदैव संघर्ष किया था, जिससे हमारे देश के किसानों में जागरूकता आई और अपनी खेती में नए वैज्ञानिक अनुसंधानों का प्रयोग करके देश के कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा ने कहा कि वर्तमान में खेती की जोत लगातार कम होती जा रही है। किसानों की खेती की लागत बढ़ रही है और आमदनी घट रही है। ऐसी स्थिति में किसानों को कृषि विविधीकरण को अपनाकर खेती से आमदनी बढ़ानी चाहिए।

ग्रीन गार्डन मैरिज होम में डॉ. अशोक सिंह की अध्यक्षता में गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरन सिंह को याद किया गया। प्रेम सिंह आर्य, हीरा सिंह आर्य, रामवीर सिंह डागुर, निर्भय सिंह, डीएफओ लाल सिंह, एडीएम अमर सिंह चाहर, डॉ. धीरेंद्र गोधारा, डॉ. योगेन्द्र सिंह, थान सिंह सोलंकी, निरंजन सिंह प्राचार्य आदि वक्ताओं ने चौधरी को दलित, मजदूर किसान का मसीहा बताया। वैद्य रामवीर सिंह ने चौधरी चरन सिंह के व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में कविता पाठ किया। इस अवसर पर नीरज चाहर, विक्रम सिंह, हाकिम सिंह राणा, विजय सिंह मालौनी, हेमराज सिंह सिनसिनी, जसवंत सिंह एईन, शंकर दयाल सोलंकी, रूपेंद्र सिंह, सतवीर सिंह आदि ने भी विचार व्यक्त किए। गोष्ठी के संयोजक दर्याब सिंह पूर्व प्राचार्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। संचालन रनवीर सिंह कासौट ने किया।

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जयन्ती पर भूरी सिंह व्यायामशाला में गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुये डॉ. सुभाष गर्ग ने चौधरी चरण सिंह को किसानों ही नहीं अपितु गरीबों का मसीहा बताया। इस अवसर पर नवनिर्वाचित पार्षद सतीश सोगरवाल, नरेन्द्र चैधरी, राजेन्द्र सिंह राजू, श्यामसुन्दर गौड, रामेश्वर सैनी, मुकेश जाटव आदि का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन चुन्नी कप्तान ने किया।

भरतपुर. राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र में चौधरी चरण सिंह की जयंती में मौजूद अतिथि व किसान।

देश में सरसों उत्पादन की अपार संभावनाः पीके राय

सरसो अनुसंधान निदेशालय में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद लोग। *संवाद*

संवाद न्यूज एजेंसी

सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर में किसान दिवस पर कार्यक्रम हुए आयोजित

भरतपुर। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर में किसान दिवस पर सोमवार को किसान-वैज्ञानिक संवाद एवं प्रषिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। देश में सरसों उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं। किसानों एवं वैज्ञानिकों की मेहनत से सरसों उत्पादन में बहुत बढ़ोत्तरी की जा सकती है।

किसानों को संबोधित करते निदेशालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने कहा कि देश में सरसों उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं। किसानों एवं वैज्ञानिकों की मेहनत से सरसों उत्पादन में बहुत बढ़ोत्तरी की जा सकती है। देश के अधिकांश जिलों में सरसों की उत्पादकता बहुत कम है, जिसे वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर 25-30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आसानी से किया जा सकता है।

आवश्यकता इस बात की है कि नवीन तकनीकों की जानकारी किसानों को समय पर मिले और तकनीकों को अपनाने में आने वाली समस्याओं का समाधान समय पर किया जाये। डॉ. एमएल दौतानिया ने किसानों को अनुसंधान कार्यक्रमों की जानकारी दी।

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जयंती पर उनके योगदान को याद करते हुए निदेशालय के निदेशक डॉ. डॉपी के राय ने कहा कि चौधरी चरण सिंह ने देश के किसानों में नई चेतना का संचार किया। चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा पर निदेशक ने माल्यार्पण किया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा ने कहा कि वर्तमान में खेती की जोत लगातार कम होती जा रही है। ऐसी स्थिति में किसानों को कृशि विविधीकरण को अपनाकर खेती से आमदनी बढ़ानी चाहिए।